International Journal of Applied Research 2014; 1(1): 115-117

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 3.4
IJAR 2014; 1(1): 115-117
www.allresearchjournal.com
Received: 25-11-2014
Accepted: 29-12-2014

डॉ. माधवी शर्मा
(प्राचार्य) डी. बी. (पी. जी.)
महाविद्यालय, खेरली (अलवर)

Correspondence:
डॉ. माधवी शर्मा
(प्राचार्य) डी. बी. (पी. जी.)
महाविद्यालय, खेरली (अलवर)

वैष्वीकरण का वैदिक स्वरूप

डॉ. माधवी शर्मा

वैश्वीकरण स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपान्तरण की प्रक्रिया हैं। वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया के वर्णन के लिए प्रयुक्त की जाती है जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं तथा एक साथ कार्य करते हैं। यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का संग्रह है। इस वैश्वीकरण में सात्मीकरण एवं अलगाव दोनों होते हैं।

वैश्वीकरण के उदारीकरण, भूमण्डलीयकरण प्रमुख पर्याय हैं – प्रसिद्ध दार्शनिक ज्या ब्राद्रिला ने वैश्वीकरण और भूमण्डलीयकरण में अन्तर करते हुए लिखा है – ''वैश्वीकरण का संबंध मानवाधिकार, स्वतन्त्रता, संस्कृति और लोकतन्त्र से है। वहीं भूमण्डलीयकरण प्रोद्यौगिकी, बाजार, पर्यटन और सूचना से ताल्लुक रखता है।''

वैश्वीकरण पृथ्वी पर रहने वाले सभी लोगों की वैश्विक एकता और कल्याण के लिए सैद्धांतिक रूप में समर्पित व बढ़ती जा रहीं एक सतत् प्रक्रिया है। इस प्रकार कहा जा सकता है 'वसुधैव कुटुम्बकम्' 'सारा विश्व ही एक परिवार है' इस प्राचीन वैदिक कथन के अनुसार एक ही परिवार के रूप में समस्त विश्व का एकीकरण है। समस्त जगत के जन एक ही ग्रह के निवासी हैं इसलिए सभी के विकास का एकमात्र उद्देश्य होना चाहिए।

वेद ज्ञान का सागर हैं। ये भूत, वर्तमान और भविष्य के लिए प्रकाश स्तम्भ हैं। समाज, देश और राष्ट्र का क्या स्वरूप होना चाहिए? समाज की आर्थिक स्थिति के उन्नत करने के तरीके देश में निवास करने वाले जन सामान्य के आचार – विचार के उन्नयन के तरीके, शिक्षा के आदर्शरूपता के कारक, वेदों में प्राप्त होने वाले विज्ञान को जनोपयोगी बनाने के माध्यम, मानव–जीवन में आध्यात्म की आवश्यकता, विश्व बन्धुत्व की भावना आदि के ज्ञान से वैश्वीकरण के अंकुर प्रस्फुटित हुए।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद व सामवेद केवल एक व्यक्ति, एक समाज, एक राज्य व एक राष्ट्र का ही विवेचक नही है वरन् विश्वशान्ति, और विश्वबन्धुत्व का महान संदेश देने वाला भी है। वेदों से सारे विश्व में निर्भयता और सुरक्षा की भावना जाग्रत हुई है। व्यक्ति और समाज की उन्नति के साथ ही साथ पूरे विश्व की उन्नति एवं सबके साथ बन्धुत्व के व्यवहार के अंकुर स्फुरित हुए हैं। यही वेदों में वैश्वीकरण है। इस प्रकार वेद आधुनिक सन्दर्भ में देश, जाति, समाज और विश्व के लिए उपादेय ग्रन्थ हैं।

मैक्समूलर ने लिखा है 'मानवीय चिंतन शक्ति यहाँ पर अपने सर्वोच्च शिखर पर है, इसके आगे शेष नहीं है, आर्थिक जगत की समस्याओं का हल यही मूल सिद्धान्त है।'

वैदिक युग में आर्यों की भ्रमणशील प्रवृत्ति के कारण भारतीय संस्कृति विविध क्षेत्रों के वर्ण समुदाय, जाति समुदाय को समन्वित करके विकसित हुई जिसके परिणामस्वरूप वैदिक कालीन ज्ञान, संस्कृति व सभ्यता के प्रचार – प्रसार की अभिरूचि बढ़ी। जब वैदिक काल मे प्रचारक अपने देश की संस्कृति का प्रचार करने के लिए अन्य देशों में रहने लगे जिससे कि हमारे मूल्य, मान्यताओं, रीति रिवाज, आर्थिक जीवन शैली का आदान–प्रदान होने लगा अर्थात् कुछ हमने अन्यों से ग्रहण किया व कुछ उन्होने हमसे गृहण किया। भारतीय वैदिक साहित्य के ज्ञान का अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ तथा भारतीय कला को आधार स्तम्भ मानकर स्तूपों, मन्दिरों आदि का निर्माण कराकर

तैत्तरीय उपनिषद में उल्लेख मिलता है कि वेदों में वर्णित संस्कृति के प्रचार – प्रसार के लिए दूसरे देशों में जाने का आदेश दिया – ''भिक्षुओं एक–एक भिन्न–भिन्न दिशाओं में जाओ, दो एक ही देश को ना जाओं और तथागत सत्य का प्रचार करो, यह सत्य जो आरम्भ में कल्याणकारी है, मध्य में कल्याणकार है, अन्त में कल्याणकारी है, उसका बहुजन हिताय बहुजन सुखाय प्रचार करो।[1]

यजुर्वेद में प्रत्येक वर्ग विशेष को अपने कार्य विशेष में संलग्न होना बताया है –''ब्रह्माणे ब्राह्माणाय क्षत्राय राजन्यं मरूद्भ्यः वैश्यं तपसे शूद्रम्''। इत्यादि समाज का प्रत्येक वर्ग जन अपने कार्यों को कर्त्तव्य भावना से करेगा, तभी राष्ट्र या विष्व की उन्नति होगी समृद्धि होगी, शान्ति होगी। इसी की

पुष्टि गीता में ''स्वे स्वे कर्मण्यीयरतः संसिद्धं लभते नरः'' इस कथन से होती है। ऋग्वेद तथा यजुर्वेद में लिखित भद्र सूक्त में सम्पूर्ण विश्व की भद्रता की कामना है। यजुर्वेद में शान्ति अध्याय में विश्वशान्ति के लिए प्रत्येक अंगो का स्मरण कर शान्ति की प्रार्थना की गयी है। इसमें वाणीमन प्राण श्रोत्र द्वारा क्रमशः ब्रह्म स्वरूप ऋग्यजुः साम अथर्ववेद में जाने का प्रथम उल्लेख है। अपने दोषों को दूर करने की चर्चा है समुचित सन्मार्ग की प्रेरणा, ईश्वर से कल्याण की कामना, आनंद की कामना, दुःखनाश की कामना, रक्षा की कामना, सभी इन्द्र, मित्र, वरूण, इन्द्रपूजा, इन्द्रसोमदेवताओं से सुख समृद्धि तथा शान्ति की कामना है। पृथ्वी, जलसे, अनुकूलार्थ प्रार्थना के साथ–साथ द्यौ, अन्तरिक्ष, पृथ्वी, जल औषधि वनस्पति विश्वदेव ब्रह्मा से प्रार्थना करते हुए सभी प्राणियों एवं समस्त विश्व में शान्ति की कामना इसमें प्राप्त होती है।

शान्ता द्यौः शान्ता पृथिवी शान्तमिद्मूर्वन्तरिक्षम्
शान्ताः उदन्वतीरायः शान्ता नः सन्त्वोषधीः।
शान्तानि पूर्वरूपाणि शान्तं नो अस्तु कृताकृतम्
शान्तं भूतं च भव्यं च सर्वमेवशमस्तु नः।।
पृथिवी शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिर्द्यौः शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे में देवाः शान्तिः सर्वे में देवाः शान्ति।
शान्तिः शान्तिभिः। ताभिः शान्तिभिः सर्वशान्तिभिः शमयामोऽहं यदिह घोरं यदिह पापं तच्छातं तच्छिवं सर्वमेव शमस्तु नः।
अथर्ववेद में भी शान्ति मन्त्रों का दो सूक्तों में संकलन है जहाँ सभी के शान्ति की कामना की गयी हैं–
इयं या परसेष्ठिनी वाग्देवी ब्रह्मसंशिता। यथैव ससृजे घोरं तथैव शान्तिरस्तु नः।
इदं यत् परमेष्ठिनी मनो वां ब्रह्मसंशितम्। येनैव ससृजे घोरं तथैव शान्तिरस्तु नः।
इमानि यानि पंचेन्द्रियाणि मनः षष्ठानि में हृद्धि ब्रह्माणा संशितानि यैरेव ससृजे घोरं तैरेव शान्तिरस्तु नः।

इस मंत्रों में द्यौ, पृथिवी, अन्तरिक्ष, जल, औषधि पूर्वरूप, कृतअकृत कर्म, भूत, भविष्य, परमस्थानस्थित ज्ञान युक्त वाणी, परमस्थान स्थित ज्ञान से तेजस्वी मन, पंचेन्द्रिय षष्ठ मन से शान्ति की कामना की गयी है। इस प्रकार प्रत्येक वेद के संहिता ब्राह्मण आदि वैदिक साहित्य में विश्व कल्याणार्थ अनेक नियमों विधानों आरधनाओं यज्ञ कर्मो तथा सदाचरणों से विश्व के सुख समृद्धि और शान्ति की कामना प्राप्त होती है। विश्वशान्ति का उपदेश उपनिषद आदि के वेदान्त वाक्यों से होता है। जहाँ व्यक्ति'' विषयेभ्यः इन्द्रियो परमः शान्तिः'' इस शान्ति के लक्षणों को बताता है। जब व्यक्ति या समाज पुल की आसवित से रहित कर्त्तव्य भावना से मोह एवं अहंकार विहीन हो कर्म करता है। उसके सभी कार्य परमेश्वर प्रीत्यर्थ लोक हितकारी होते हैं तभी शान्ति को प्राप्त किया जा सकता है –

विहाय कामान्यः सर्वान् पुमाँश्चरति निः स्पृहः।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति।।
भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम्।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति।।

इस प्रकार की शान्ति की खोज बाहर नहीं अपने अन्दर ही उत्पन्न करनी होगी और संपूर्ण विश्व को उसी शान्ति का साक्षात्कार कराना होगा।

अन्त में यजुर्वेद के इन मन्त्रों से समस्त विश्व की कल्याण की कामना करता हूँ।
हे अग्नि रूप अग्नि के प्रिय परमात्मा तुम मानव प्रजा के लिए कल्याणकारी हो,
तुम पृथिवी अन्तरिक्ष एवं वनस्पतियों को सन्तप्त न करो –
''शिवो भव प्रजाभ्यों मानुषीभ्यस्त्वमाङ्गिरः माद्यावा पृथिवी अभिशोचनीर्माऽन्तरिक्षं माव्वनस्पतीनाम्''।

सम्पूर्ण विश्व का राजा परमेश्वर द्विपद मनुष्य चतुष्पद पशुओं को शान्ति प्रदान करो।
''इन्द्रोविश्वस्य राजति। शं नो असतु द्विपदे शं चतुष्पदे''।
हरि ओम्। व्वेदोसि, येनत्वन्देवव्वेददेवेभ्यो व्वेदो भवस्तेन मह्यं व्वेदो भूयाः।
देवागातु विदोगातुं व्वित्वा गातुमित। मनसस्पतऽइमन्देव यज्ञ ँ स्वाहा व्वातेधाः।।

हे वेद तू सभी का ज्ञाता है। हे वेद रूपी देव जिस प्रकार तू देवों के लिए ज्ञान का दाता हुआ वैसे ही तू मुझे ज्ञान दने वाला हो। हे मार्गदर्शक देवों सत्यमार्ग को जानकर सत्यमार्ग पर ही जाओ। हे मन के स्वामी देव इस यज्ञ को तेरे लिए समर्पित करता हूँ, इसे वायु में स्थापित करो। यजुर्वेद 2/29 यह मन्त्र वेदों के महत्व को प्रदर्शित करता हुआ उसे ज्ञान का प्रमुख स्रोत मानता है।
संपूर्ण सृष्टि की कल्पना परब्रह्म के विवर्त के रूप में जहां वेदान्तियों ने की वहीं इसे परब्रह्म की इच्छा से विरचित भी स्वीकार किया है। इस संदर्भ में श्री सच्चिदानंदजी का कथन प्रासंगिक है –

''आनंदं ब्रह्म व्यजानीयाद्''। अर्थात् साक्षात ब्रह्मा ही आनंद रूवरूप है।
इस प्रकार वेदों में जितने भी देवो का वर्णन अथवा स्तुति गान है वह प्रकारान्तर से परमात्मा का वर्णन ही है।
आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्।
सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति।।

ध्यातव्य् है कि वेदों में देवताओं की आराधना एवं यज्ञकार्य का संपादन इन दो विषयों पर ही प्रमुखतः बल दिया गया है। इन्हीं के आधार पर सम्पूर्ण –जगत की सुख–शान्ति समृद्वि की निर्विध्नता की, स्वर्ग इत्यादि उत्तम लोक प्राप्ति की एवं मोक्ष की मनोकामना जाहिर की गयी है। निष्कर्षतः स्पष्ट है कि राष्ट्र अथवा विश्व या जगत के अभ्युदय अभिवृद्वि की मनोकामना सभी वेदों में प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष दृष्टव्य प्रतीत होती है।
सर्वजन हिताय तथा सर्वजनसुखाय की भावना ने वैदिक कालीन ऋषियों के, मनीषियों के हृदय को इतना द्रवीभूत कर दिया कि वे सारे विश्व मे शान्ति की स्थापना के लिए द्यूलोक को शान्तिमय देखने की कल्पना कर उठे। उन्होने अंतरिक्ष को शान्त देखना चाहा धरती को शान्ति की जन्मदात्री के रूप में देखने की विराट् कल्पना की, अगाध जलाशयों को शान्ति के धाम के रूप में देखने की परिकल्पना की। ऋषियों ने संसार के समस्त देवताओं को शान्ति की स्थापना में सहयोगी माना। सृष्टि के कण – कण में व्याप्त ब्रह्म से शान्ति की अर्चना की गयी मनीषियों के सृष्टि में शान्ति की ऐसी खोज ने सारे विश्व के कल्याण के लिए वेदों मे निहित इस शान्ति मन्त्र का प्रचार – प्रसार किया।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवीशान्तिरायः शान्तिरोषधयः शान्ति।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वदेवाः शान्ति ब्रह्मशान्तिः सर्वशान्तिः।
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।[1]

इस प्रकार मानव संस्कृति के हित को सर्वकल्याण की भावना व जन हित के लिए वैश्वीकरण है।
हर देश का अपना इतिहास होता है परम्परा होती है। संस्कृति देश की आत्मा होती है, शरीर में दौडनें वाला रक्त होता हैं या फिर श्वास होती है जो कि आवश्यक होती है। संस्कृति के अपने

आदर्श होते हैं, मूल्य होते है और उन मूल्यों की संवाहक संस्कृति होती हैं। वेदों में मूल रूप से चार मूल्यों की प्रधानता बतायी गयी है – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। ऐसा संभव नहीं हो पाता कि कोई भी व्यक्ति एक समय में इन चारों मूल्यों को एक ही साथ चरितार्थ कर सकें क्योंकि मानव जीवन सीमित तथा क्षण भंगुर है। इसलिए हिन्दू धर्म में वर्णाश्रम व पुनर्जन्मवाद की अवधारण पर बल दिया गया है। वैदिक काल में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के रूप में वर्णित वर्ण व्यवस्था गुण और कर्म पर आधारित थी।

अनेक प्राचीन साक्ष्य विदेशों में भारतीयों की यात्रा वैश्वीकरण का उल्लेख करते हैं। इनमें से डा. वी. सी. पाण्डेय के अनुसार निम्न है–

1. जातक – इसमें अनेक स्थलों पर भारतीयों की सामुद्रिक यात्राओं के वर्णन है। अनेक स्थलों पर विदेशों के नाम भी मिलते हैं।
2. अर्थशास्त्र – इसमें भारत और विदेशों के पारस्परिक संबंध के अनेक महत्वपूर्ण साक्ष्य है।
3. निद्देस – इस बौद्ध ग्रन्थ में सनुदास की सुवर्ण भूमि यात्रा का मनोरंजक वर्णन है।
4. पेरिप्ल्स – इसमें भारत के अनेक महत्वपूर्ण बन्दरगाहों का उल्लेख है । ये विदेशी व्यापार के केन्द्र थे।
5. टालमी – इस लेखक ने भारत, मलाया प्रायद्वीप, जावा, सुमात्रा आदि अनेक बन्दरगाहों का उल्लेख किया है।
6. महाकाव्य – रामायण एवं महाभारत ऐतिहासिक महाकाव्यों में अनेक विदेशों, उनकी सामग्री और भारत के साथ होने वाले उनके व्यापार के महत्वपूर्ण उल्लेख मिलते है।
7. मिलिन्द प्रश्न – यह बौद्ध ग्रन्थ भी भारत और विदेशों के बीच विद्यमान संपर्क के अनेक साक्ष्य प्रस्तुत करता है।
8. अग्नि पुराण – यह जम्बूद्वीप (भारत) के साथ–साथ द्वीपान्तर (बृहत्तरभारत के द्वीपों) का उल्लेख करता है।
9. प्रयाग प्रशस्ति – समुद्र गुप्त के इस अभिलेख में सिंहल आदि (सर्वद्वीपों) का उल्लेख है। सम्भवतः ये दक्षिण पूर्वी एशिया के द्वीप थे।
10. फाह्यान औन ह्वेनसांग – इनके विवरणों से स्पष्ट हेा जाता है कि मध्य एशिया और दक्षिण पूर्वी एशिया भारतीय संस्कृति के गढ़ थे।
11. विदेशी सामग्री – मध्य एशिया एवं दक्षिण पूर्वी एशिया में अनेक प्राचीन पाण्डुलिपियों, अभिलेखों, मन्दिरों, स्तूपों आदि की प्राप्ति हुई है।

वेद अपनी पवित्रता के कारण इसमें प्रतिपादित मानव एकता की अवधारणा से वैश्वीकरण के सृजक के रूप में सर्वमान्य हैं। वेदों को समस्त विश्व की विरासत कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं है। वेद भारतीयों के जीवन के मार्गदर्शक होने के साथ ही विश्व के समस्त धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैति व वैज्ञानिक क्षेत्र पर भी अपनी अमिट छाप छोड़े हुए हैं।

ऋग्वेद में सब के कल्याण के लिए, मानव एकता से संबंधित मन्त्र में विश्व कल्याण की प्रार्थना है –

संगच्छध्वं संवद्ध्वम् सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानानि उपासते।।

हे स्ताताओं, जैसे पुरातन देवगण एकमत होते हुए यज्ञ में हविष्यान्न को ग्रहण करते हैं, वैसे ही तुम सब एक साथ मिलकर चलो, परस्पर विरोध का परित्याग करके एक ही प्रकार का वाक्य उच्चारण करो जिससे तुम्हारे मन एक समान ज्ञान प्राप्त करें।

ऋग्वेद के संज्ञान सूक्त में विश्व एकत्व की भावना का संदेश देता हुआ यह मंत्र :–

समानोमन्त्रः समिति समानी
समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिः मन्त्रये वः
समानेन वो हविषा जुहोमि।।

वेदों की इस मानव एकता के सिद्वान्त की जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन में पुनरावृत्ति हुई। समस्त विश्व में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि विविध क्षेत्रों की गोष्ठियों, सम्मेलनों के माध्यम से समग्र विश्व एक ग्रह (घर) है इस वैश्वीकरण के सिद्धान्त का समर्थन किया जा रहा है। वैश्वीकरण का यह सिद्धान्त विश्वशान्ति के लिए समर्पित है। केवल भारत या भारतीयों के लिए ही नहीं अपितु समस्त विश्व के लिए शांति है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।

सभी जीवों की कल्याण की कामना के साथ – साथ परस्पर सौहार्द एवं बंधुत्व का प्रतिपादन वैदिक संस्कृति ने किया।

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

यह मेरा है यह पराया है यह गणित छुद्रता का प्रतीक है। मानवीय गुणों से संपन्न के लिए सम्पूर्ण वसुन्धरा ही एक परिवार है। जब सारा संसार ही अपना है तो कोई भी व्यक्ति समाज, राज्य व राष्ट्र अपने व्यक्ति, समाज, व राष्ट्र के लिए अनुचित माने जाने वाला आचरण दूसरे व्यक्ति, समाज, राज्य व राष्ट्र के प्रति क्यों करें? आमनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरते।' ईशावास्योपनिषद् में कहा है –

ईशावास्यामिदं सर्वं यत्किंचित् जगत्यां जगत्।
तेन व्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।[1]

विश्व कल्याण व विश्वबन्धुत्व की भावना से ओत – प्रेात होकर ' आत्मवत् सर्वभूतेषु' इस वैदिक बीज मन्त्र दिया और इसी पर चलकर ही विश्वशान्ति संभव है।

वैश्वीकरण से स्थानीय से सभी स्तरों पर विकास, तीव्रता से जीवन के समस्त क्षेत्रों में बढ़ रहीं हैं । देशों मे विकास के लिए आपसी निर्भरता बढ़ रहीं है। सारा विश्व एक गांव के रूप में परिवर्तित हो रहा है। इस प्रक्रिया में भारतीय दृष्टिकोण का महत्तव उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। क्योंकि विविधता में एकता, सहअस्तित्व, समन्वय की देन भारत की ही है।